The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 7 | July 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF(2026): 5.6
Website: www.theacademic.in

वीरेन डंगवाल की कविताओं में जनप्रतिरोध

भँवर चौधरी
शोधार्थी, हिंदी विभाग, राजर्षि भर्तृहरि मत्स्य विश्वविद्यालय, अलवर (राज.)

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.22097848

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Received: 23-06-2026

Accepted: 19-07-2026

Published: 21-08-2026

Keywords:

वीरेन डंगवाल, प्रतिरोध, मार्क्सवाद, विमर्श, अन्तर्विरोध, बाजार।

ABSTRACT

समकालीन हिंदी काव्य-परंपरा में वीरेन डंगवाल एक ऐसे सशक्त हस्ताक्षर हैं, जिन्होंने अपनी रचनाधर्मिता के माध्यम से हाशिए पर स्थित समाज और दमनकारी सत्ता-विमर्श के विरुद्ध जन प्रतिरोध को मुखरित किया है। आठवें दशक के आरंभिक चरण में, जब वैश्वीकरण एवं उदारीकरण की आवाज़ पृष्ठभूमि में स्पष्ट होने लगी थीं, तब डंगवाल ने देश की बदलती सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियों के मध्य मानवीय अस्मिता और उसकी गरिमा के प्रश्न को अपनी कविता में प्राथमिकता के साथ उठा रहे थे। वीरेन डंगवाल अपनी कविताओं में समाज के सामाजिक बदलाव को सामने लाते है। उनके समकालीन सामाजिक विद्रूपताओं को पूरी पारदर्शिता के साथ रेखांकित करता है। वीरेन डंगवाल की रचना दृष्टि उस संपूर्ण सत्ता पक्ष और व्यवस्था को कटघरे में खड़ा करती है, जो जन-विरोधी नीतियों का पोषक है। डंगवाल की कविताओं में तत्कालीन व्यवस्था के प्रति गहरा मोहभंग, लोकतांत्रिक मूल्यों के निरंतर संकुचन तथा आम जनमानस के अंतहीन संघर्षों की प्रामाणिक अभिव्यक्ति हुई है। वीरेन डंगवाल की कविताओं में जन प्रतिरोध का स्वर प्रमुख रूप देखने को मिलता है। इस शोध पत्र के माध्यम से वीरेन डंगवाल की कविताओं में जन प्रतिरोध के स्वर का मूल्यांकन किया गया है।

मूल आलेख

हिन्दी साहित्य में कविता का आठवां दशक परिवर्तन के समय का प्रतीक है। शीत युद्ध, सोवियत संघ की हार और इसके बाद के विखंडन, नई तकनीकों, बाज़ारवाद और सूचना तंत्र जैसी अनेक राजनीतिक घटनाएँ इस काल में

Disclaimer: The opinions, interpretations, conclusions, recommendations, analyses, and statements expressed in this research article are solely those of the author(s) and do not reflect the views, policies, or positions of the Publisher, Chief Editor, Editors, Editorial Board, Reviewers, or their affiliated institutions. The author(s) are solely responsible for ensuring the originality, authenticity, and integrity of the manuscript and for ensuring that it is free from plagiarism, AI-generated content, copyright infringement, data falsification, and any other form of academic misconduct.

निरंतर घटित हो रही थीं। स्वतंत्रता के बाद भारतीय समाज में तेजी से कई बदलाव हुए हैं, और इन परिवर्तनों का असर आठवें दशक की कविता में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। साहित्य के क्षेत्र, विशेषकर कविता में जो परिवर्तन आठवें दशक में हुआ, वह एक अचानक हुई घटना नहीं थी, बल्कि यह युगीन दृष्टिकोण और सामाजिक ढांचे में आए परिवर्तनों का परिणाम था।

आठवें दशक की कविता को समकालीन कविता कहा जाता है। यह मुख्यतः आपातकाल के बाद की कविता है। 1947 में भारत को मिली आज़ादी से लेकर अस्सी के दशक तक, भारतीय लोकतंत्र में जनता की उम्मीदें बार-बार से टूटती रहीं। हालांकि, राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था द्वारा इन उम्मीदों और मूल्यों का यह विघटन अब भी जारी है। हमारे समाज का वर्गीकरण और बहुस्तरीय संरचना है। इस समाज को कविता के विविध रूपों की ज़रूरत है और अनंत काव्य का भी।

समकालीन संदर्भों में सभी कवियों ने विरोध या प्रतिपक्ष की भूमिका में जनजीवन की ओर अधिक ध्यान दिया है। इन कवियों के लिए किसी विशेष विचारधारा के प्रति प्रतिबद्धता से ज्यादा आम आदमी की दैनिक जीवन से गहरा संबंध महत्वपूर्ण है। आठवें दशक के कवि 'लोकतंत्र की चिंता' व 'नीतियों की आलोचना' दोनों ही काम को एक साथ करते हैं। वैचारिक स्तर पर 'हाशिए की बात' ही कविता का मुख्य केंद्र बन जाती है। लोकतंत्र के संकुचन, प्रकृति, पर्यावरण पर आक्रमण और भूमण्डलीकरण के प्रति चिंताओं का सामना इस दशक की कविता कर रही थी। 80 के दशक तक नई उदारवादी नीतियों का संकेत भी मिलने लगा था, उसके बाद संचार क्रांति का उदय हुआ जिसका स्पष्ट प्रकट होना 91 में हुआ।

वीरेन डंगवाल ऐसे कवि हैं जो कविता को आपातकाल के दुख से निकालकर शोक को शक्ति में बदलने की एक नई वैचारिक जमीन पर अपनी रचनाएँ खड़ी करते हैं। वीरेन डंगवाल की लोकतांत्रिक चेतना, जन प्रतिरोध की भावना, धर्मनिरपेक्ष विचार एक प्रतिबद्ध स्वर की सूचना देता है। वीरेन अपनी कविता में 'काफी कठिन समय है साथी' लिखकर 'समय' के प्रति चिंता को व्यक्त करते हैं। नई व्यवस्था के अंतर्गत प्राकृतिक संसाधनों का दोहन अमीरों के हित पूरे करने में कर दिया जायेगा।

वीरेन डंगवाल 'मानवीय पीड़ा' व समाज के जन प्रतिरोध को व्यापक रूप से अपनी कविताओं में दर्ज करते हैं। उनकी कविताओं में अभिव्यक्त समाज, संस्कृति, कला, राजनीति, भाषा और समाज की विविधता एवं साधारण की असाधारणता को बयां करती वैचारिकता हैं। वीरेन डंगवाल की सभी कविताएँ समाज के मध्य-वर्ग का आईना है। वीरेन डंगवाल की विशेषता यह रही कि अपने काल की इन विसंगतियों का रोना नहीं रोया बल्कि आगे आने वाली पीढियों को इन व्यक्ति व समाज विरोधी शक्तियों के समक्ष न हार मानने की हिम्मत प्रदान करते हैं। उनकी कविताओं में सरकारी तंत्र की ताकत के सामने अपने इस टूटते समाज के प्रति धैर्य और सुधार की भावना हैं। तथा यह विश्वास कि -

"वे बताती हैं कि दरअसल कितनी भी बड़ी हो तोप
एक दिन तो होना ही है उसका मुँह बन्द बड़ी बंद"[i]

इस समय जब जन-विरोधी तत्वों का प्रभुत्व बढ़ रहा है, वीरेन डंगवाल सामान्य भारतीय जनता की हार और वंचना एवं मध्य वर्ग के अंतर्विरोधों से उत्पन्न अवसाद को अपनी कविता में गत्यात्मक संदर्भ के साथ मार्मिकता से अभिव्यक्त करने वाले कवि हैं-

"रात चूँ-चर्र-मर्र जाती है
ऐसी गाड़ी में भला नींद कहीं आती है?
इस क़दर तेज़ वक़्त की रफ्तार
और यह सुस्त जिन्दगी का चलन
अब तो डब्बे भी पाँच ऐसी के
पाँच में ठूँसा हुआ बाक़ी वतन"[ii]

कवि वीरेन डंगवाल की कविताएँ शब्द व कर्म की एकता पर जोर देती है, जनपक्षधरता को मुख्य रूप से अपनाती है, जीवन की तीव्र व विकट अभिव्यक्तियों का बयान हैं। समय के साथ ह्रासोन्मुख मनुष्यता को संभालने और नव जीवन-दृष्टिकोण देने का मूल मंत्र उनकी कविता में है। वीरेन डंगवाल की कविताओं में जन विरोधी समय दर्ज करते हैं।

विचारधारा के हिसाब से वीरेन डंगवाल साम्यवादी कवि हैं जो समकालीन कविता में मार्क्सवादी विचारधारा का लचीला प्रस्ताव सामने लाते हैं। वीरेन डंगवाल की कविता में विचार के साथ भाव की प्रधानता अधिक है। प्रत्येक रचनाकार का मत रचना-प्रक्रिया के संदर्भ में अलग हो सकता है किन्तु रचना प्रक्रिया की जड़ में कल्पना, भावना, संवेदनात्मक उद्देश्य, और बुद्धि तत्व उपस्थित होते हैं।

"साहित्य मनुष्य और समाज के संबंधों की अभिव्यक्ति है। कविता जहाँ एक ओर अपने समय से प्रभावित होती है, वहीं कविता के जरिए समय की आकांक्षाएँ और आवश्यकताएँ भी प्रकट होती हैं"[iii] विचारकों एवं बुद्धिजीवियों को स्वस्थ समाज की परिकल्पना के लिए समाज की विकृतियों, खंडित व्यवस्थाओं, अन्याय और अमानवीय विधान को निरंतर बदलने की आवश्यकता होगी । वीरेन डंगवाल की कविता 'हमारा समाज' चारों ओर व्याप्त घने अंधेरे और कालेपन को बखूबी उजागर करती है, वीरेन की यह विशेषता है कि वह समाज में व्याप्त कालेपन को बारीकी नजर से पहचान लेते हैं, व संघर्ष के महत्व को भी। सामाजिक अवसरचंनागत कालेपन को अभिव्यक्त करती है "अपने समकालीनों में संभवतः सबसे अभिनव और साहसी कवि वीरेन डंगवाल साधारण और रोज़मर्रा दिखने वाले संसार के साथ गहन वस्तुनिष्ठता और कौशल के साथ बर्ताव करते हैं"[iv]

जिस बात को कहने से दूसरे कवि कतराते है वही बात वीरेन डंगवाल कौशल व साहस को जुटाकर कह देते है। उनके समकालीन कवियों में कविता का ऐसा विन्यास सिर्फ उनके पास ही है। उनमें यह प्रतिभा व साहस था जो मानवता की ह्रास पर, शोक उपजाए बिना ही दुनिया भर की बात कर सकें। 'हमारा समाज' व 'उजले दिन जरूर' वीरेन डंगवाल की कविताओं के दो शीर्षक ही नहीं बल्कि कविता के दो छोर है। एक छोर पर हमारा वर्तमान समाज व समाज की अवसंरचना है जो शर्तिया काली है । दूसरे छोर पर उजले दिन जरूर आएंगे का विश्वास प्रकट होता है।

"पर हमने यह कैसा समाज रच डाला है
इसमें जो दमक रहा, शर्तिया काला है
वह क़त्ल हो रहा, सरे आम चौराहे पर
निर्दोष और सज्जन, जो भोला-भाला है
किसने आखिर ऐसा समाज रच डाला है
जिसमें बस वही दमकता है, जो काला है?"[v]

इस कविता में जो काला रंग किसी वर्ण का प्रतीक न होकर बल्कि सामाजिक अन्याय व अनैतिकता तथा पूंजी वादी शोषण का प्रतीक है। कविता का समापन निराशा पर न होकर जन चेतना व प्रतिरोध का आह्वान के प्रश्न के साथ होता है 'बोलो तो, कुछ करना भी है, या काला शरबत पीते-पीते मरना है?

"हर दौर कभी तो खत्म हुआ ही करता है
हर कठिनाई कुछ राह दिखा ही देती है।
आये हैं जब हम चलकर इतने लाख वर्ष
इसके आगे भी तक चल कर ही जायेंगे,
आएंगे, उजले दिन ज़रूर आयेंगे"[vi]

वीरेन डंगवाल की कविताओं को पढ़ने पर अवसाद व निराशा में डूबा पाठक भी एक नए उजास से भर जाता है।कविता 'उजले दिन जरूर' उजले दिन की मात्र तसल्ली भर नहीं है, उन्हें पता है कि कितना ही बेईमानी, अपराध, रिश्वतखोरी, झूठ आदि प्रवृत्तियां दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही हैं, लेकिन इन सभी के बीच न्याय को स्थापित करने वाले लोग भी है-

"हैं अभी वे लोग जो यह बूझते हैं
विश्व के हित न्याय है अनमोल
वही शिवि की तरह खुद को जाँचते
देते स्वयं को कबूतर के साथ ही में तोल"[vii]

वीरेन डंगवाल की गहरी मानवीय सवेंदना , सामाजिक न्याय के प्रति कभी न टूटने वाली आस्था को स्वर देती है । भारतीय वाङ्मय में वर्णित राजा शिबि की कथा का रचनात्मक प्रयोग समकालीन समाज में न्याय और आत्म

बलिदान के महत्व को रेखांकित किया है। कवि वीरेन हमेशा से जायद स्थानिक व विचार युक्त कविता लिखने के पक्षधर रहे है।

वीरेन डंगवाल की कविता 'तारन्ता बाबू से कुछ सवाल' में उपभोक्तावाद व खोखले विकास का जन प्रतिरोध स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है । भूमंडलीकरण ने समाज को जिस प्रकार के अंधे उपभोक्तावाद और पर्यावरण विनाश की ओर धकेला है, उसके खिलाफ डंगवाल की कलम तीखे सवाल करती है।

"पसीना जबकि हो गया एक फटा हुआ उपेक्षित जूता

हमारे इस समय में...

इन नौजवानों से कैसे छीन लिया गया उनका धर्म

और क्यों भर जाने दिया उन्होंने अपने दिमाग़ में

सड़ा हुआ जटा-जूट-घास-पात?"[viii]

कवि यहाँ नव-उदारवादी नीतियों और आधुनिकता के नाम पर पनपे दिखावे का कड़ा प्रतिरोध कर रहा है। 'पसीने का उपेक्षित जूता हो जाना' श्रम के अवमूल्यन को दर्शाता है। पूंजीवादी व्यवस्था ने मेहनत की कीमत खत्म कर दी है और युवा पीढ़ी के दिमाग में 'सड़ा हुआ घास-पात' उपभोक्तावादी कचरा भर दिया है।

"आख़िर लपक क्यों लिया हमने ऐसी सभ्यता को

लालची मुफ़्तख़ोरों की तरह? अनायास?"[ix]

यहाँ जन-प्रतिरोध व्यवस्था से सवाल पूछने और उस 'लालची सभ्यता' को नकारने में निहित है, जिसे हमने बिना सोचे-समझे अपना लिया है। आधुनिक विकास के नाम पर जिस तरह मनुष्य और संवेदनाओं की बलि चढ़ाई जा रही है, वह डंगवाल की कविताओं में तीव्र आलोचना का विषय रहा है। 'मार्च की एक शाम में आईआईटी कानपुर' नामक कविता में वे तकनीकी विकास व भारतीय शिक्षा व्यवस्था की कलई खोलते हैं, जो होनहार युवाओं को बहुराष्ट्रीय कंपनियों का गुलाम बना रही है।

"मेधा उनकी
पुकारती रही
पुकारती रही विकल।
फिर उस्ताद हत्यारों ने उसे बदला

एक निश्छल लालच में।
अन्त में बन जाएगी वह
बिल गेट्स का एक
निर्जीव किन्तु दक्ष हाथ" [x]

यहाँ 'उस्ताद हत्यारे' वे नव-साम्राज्यवादी और पूँजीवादी ताकतें हैं जो मेधा को लालच से खरीद लेती हैं। 'बिल गेट्स का निर्जीव किन्तु दक्ष हाथ' बनना मनुष्य के पूर्ण मशीनीकरण का प्रतीक है।

"दुनिया एक गाँव तो बने
लेकिन सारे गाँव बाहर रहें उस दुनिया के
यह कम्प्यूटर करामात हो।" [xi]

कवि वीरेन डंगवाल भूमंडलीकरण दुनिया एक गाँव के उस मॉडल का तीखा प्रतिरोध करता है जो वास्तविक गाँवों और वंचितों को परिधि से ही बाहर फेंक देता है। यह नव-उदारवादी आर्थिक नीतियों के खिलाफ एक बौद्धिक और काव्यात्मक प्रतिरोध है।

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि वीरेन डंगवाल की कविता के द्वारा हिन्दी साहित्य में जनप्रतिरोध की आवाज़ बने है। उनकी कविता मात्र व्यवस्था की आलोचना भर नहीं करती, वह निराशा के घने अंधकार में भी 'उजले दिन ज़रूर आएंगे' का उम्मीद भरा स्वर देती है। साधारण जनजीवन के प्रेम को अभिव्यक्त करती उनकी कविता, सांप्रदायिकता और पूंजीवाद के खिलाफ़ उनका आक्रोश, और मनुष्यता को बचाए रखने के प्रयास — ये सभी तत्व मिलकर उनकी कविता को विस्तृत फलक पर व्यक्त करते हैं। वीरेन डंगवाल सच्चे अर्थों में जनता की आवाज़ है, जिनका प्रतिरोध उनके काव्य जीवन के माध्यम से समझा जा सकता है। वीरेन डंगवाल अपने समय के यथार्थ को कविता के विषयों के रूप में चुनते हैं। तो अपने रचना से, जन प्रतिरोध की भावना को, संघर्ष करने के तौर-तरीके को सशक्त भाषा में व्यक्त करते है। अंतः वीरेन मार्क्सवादी विचारधारा में आस्था का लचीला स्वरूप प्रस्तुत करते हैं। कोई कवि बड़ा कवि तभी बनता है जब उसके रचना संसार में समकालीनता व्यक्त हो और साथ-साथ अपनी परम्परा पर भी नज़र बनाए रखे। वीरेन डंगवाल की कविताओं में समय के सापेक्ष समाज की वास्तविकता सामने आई है। उनकी अधिकांश कविताओं में तंत्र के खिलाफ़ जन प्रतिरोध की भावना देखने को मिलती है।

संदर्भ सूची

---

[i] इसी दुनिया में , वीरेन डंगवाल , नवारुण प्रकाशन , दूसरा नवीकृत संस्करण2015 , पृ .सं .62

[ii] दुष्चक्र में स्रष्टा , वीरेन डंगवाल , राजकमल प्रकाशन , पहला संस्करण2023 , पृ .सं .96

[iii] मुक्तिबोध कविता और जीवन विवेक , चंद्रकांत देवताले ,राधा कृष्ण प्रकाशन ,पहला संस्करण2003 , पृ .सं .42

[iv] इसी दुनिया में ,वीरेन डँगवाल ,नवारुण प्रकाशन ,दूसरा नवीकृत संस्करण2015 , पृ .सं .5

[v] दुष्चक्र में स्रष्टा , वीरेन डंगवाल , राजकमल प्रकाशन , पहला संस्करण2023 , पृ .सं .16

[vi] दुष्चक्र में स्रष्टा , वीरेन डंगवाल , राजकमल प्रकाशन , पहला संस्करण 2023 , पृ .सं .32

[vii] स्याही ताल ,वीरेन डँगवाल ,अंतिका प्रकाशन,पहला साजिल्द संस्करण2009 , पृ .सं .55

[viii] दुष्चक्र में स्रष्टा , वीरेन डंगवाल , राजकमल प्रकाशन ,पहला संस्करण 2023 , पृ.सं .48

[ix] दुष्चक्र में स्रष्टा , वीरेन डंगवाल , राजकमल प्रकाशन ,पहला संस्करण 2023 , पृ.सं .49

[x] दुष्चक्र में स्रष्टा , वीरेन डंगवाल , राजकमल प्रकाशन ,पहला संस्करण 2023 , पृ.सं .22

[xi] दुष्चक्र में स्रष्टा , वीरेन डंगवाल , राजकमल प्रकाशन ,पहला संस्करण 2023 , पृ.सं .23